Sectors of Economy

अर्थव्यवस्था के कार्य क्षेत्र

- मनुष्य द्वारा संपादित क्रियाएं जो मनुष्य अपने जीवन यापन एवं आर्थिक लाभ के लिए करता है, आर्थिक क्रिया कहलाती है ।
- पृथ्वी तल पर क्षेत्रीय विविधता के कारण कई विविधताएं जन्म लेती हैं और इन्हीं विविधताओं के साथ हैं क्षेत्र विशेष में एक संगठन भी पाया जाता है ।
- क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के आधार पर ही वहां की आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण होता है, परंतु कुछ हद तक उपलब्ध संसाधनों के उपयोग के लिए उपलब्ध जनसंख्या तकनीकी स्तर एवं अन्य कारक भी महत्वपूर्ण होते हैं ।यही कारण है कि विश्व के विभिन्न भागों में प्राकृतिक विविधता के साथ ही उत्पादन- उपभोग एवं वितरण संबंधी विविधता देखने को मिलती है ।

- मानव द्वारा की जाने वाली उत्पादन संबंधी इन आर्थिक क्रियाओं को 5 वर्गों में विभक्त किया जा सकता है जो निम्नलिखित हैं:
- प्राथमिक आर्थिक क्रियाएं :वह समस्त मानवीय क्रियाएं, जिनके अंतर्गत होने वाला उत्पादन प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति से अंतर संबंधित होता है, प्राथमिक व्यवसाय अथवा आर्थिक क्रियाएं कहलाती है।
- भोजन एकत्रीकरण -निर्जन सघन वनों में रहने वाली आदिम जनजातियां अपने जीवन यापन के लिए इस प्रकार की आर्थिक क्रियाओं करती है।भूमध्य रेखीय क्षेत्रों के सघन वनों जैसे कि कांगो बेसिन गिनी तट अमेजन बेसिन मलेशिया व दक्षिण पूर्वी एशिया के कुछ भाग इसमें सम्मिलित है।
- आखेट -विभागों में कृषि की उपयुक्त दशाएं एवं सुविधाएं उपलब्ध नहीं है, वहां पर निवास करने वाली जनसंख्या जीवन निर्वाह के लिए आखेट एवं मछली पकड़ कर जीवन यापन करते हैं और अधिकतर घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते है। सघन भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में आखेट एवं बर्फीले क्षेत्रों में मछली पकड़ कर जीवन यापन करते हैं।
- लकड़ी काटना -मनुष्य अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लकड़ी का उपयोग करता है जैसे कि इंधन के लिए औजार बनाने के लिए घर बनाने के लिए इत्यादि।

- पशुपालन -मनुष्य कई कारणों से इस आर्थिक क्रिया को संपन्न करता है जैसे कि कृषि में कार्य में बैल को प्रयुक्त किया जाता है, दूध के लिए दुधारू पशुओं को पाला जाता है। इसी प्रकार ऊन, परिवहन, मांस, अंडे, खाल, रक्षा इत्यादि के लिए पशुओं को पाला जाता है।
- निर्वाहक कृषि- विश्व के उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में इस प्रकार की कृषि की जाती है, जहां पर जंगलों को जलाकर खेत तैयार करके कुछ समय के लिए कृषि की जाती है बाद में उस खेत को छोड़कर अन्य स्थान पर कृषि के लिए नया खेत तैयार किया जाता ।कृषि में प्रयुक्त होने वाले औजार परंपरागत तरीके के होते हैं।
- खनिज उत्खनन, मिट्टी के बर्तन बनाना इत्यादि।

- द्वितीयक आर्थिक क्रियाएं :प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं से उत्पन्न उत्पादों पर निर्भर होती है। इन उत्पादों के स्वरूप को परिवर्तन करके अधिक उपयोगी बनाना इन क्रियाओं में सम्मिलित है।
- विनिर्माण उद्योग -प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं द्वारा उत्पादित कच्ची सामग्री को शारीरिक अथवा यांत्रिक शक्ति के द्वारा इच्छा अनुसार रूप - आकार देकर या उनके गुणों में परिवर्तन करके नए उत्पाद बनाते हैं। जैसे कि लकड़ी से फर्नीचर बनाना, लोहे से मशीन बनाना इत्यादि।
- उन्नत अथवा आधुनिक कृषि -वर्तमान में कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने के लिए कृषि में ,उन्नत बीजों, रासायनिक खादों इत्यादि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। इस कृषि का मुख्य उद्देश्य व्यापारिक होता है।

- तृतीयक आर्थिक क्रियाएं :उच्च श्रेणी की आर्थिक क्रियाएं होती हैं, जो कि प्राथमिक एवं द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं के लिए आधार का काम करती है। प्राथमिक एवं द्वितीयक क्रियाओं से उत्पन्न उत्पादों को उपभोक्ताओं, व्यापारियों तक पहुंचाया जाता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित क्रियाएं सम्मिलित है:-
- परिवहन एवं संचार
- व्यापार
- सेवाएं -बैंकिंग व बीमा सेवाएं, चिकित्सा एवं शैक्षिक सेवाएं

- **चतुर्थक आर्थिक क्रियाएं :उच्च प्रशासनिक सेवाएं, अनुसंधान तथा अन्य उच्च स्तर की सेवाएं इसमें सम्मिलित है।**

धन्यवाद